रात्रि क्लास 8/11/68 ओमशांति शिवबाबा याद है?

सतयुग में कब एक/दो खुश खैरियत नहीं पूछते हैं। यहाँ भी नहीं पूछनी चाहिए; क्योंकि यह बाप के साथ रहना तो बहुत ऊँच है। तुम जानते हो हम जन्म-जन्मांतर सदा सुखी रहेंगे। भविष्य 21 जन्मों लिए सदा सुखी रहेंगे। भविष्य 21 जन्मों लिए सदैव हम खुशी का, सुख का वर्सा ले रहे हैं बाप से। जिनको बेहद का बाप मिला उनसे जास्ती खुशी क्या होगी; परंतु माया के कारण इतनी खुशी नहीं है। ऐसे भी रहते हैं, उन जैसा दुःखी कोई नहीं। फीलिंग ऐसी आती है। बाप के पास तो सभी सुखी होनी चाहिए। रंज आदि की बात ही नहीं। माया ऐसी है जो अति सुखी को भी अति दुखी बना देती है। कारण? क्योंकि निश्चय में कमी। जो संशय बुद्धि होते हैं उन जैसा दुखी फिर कोई भी नहीं। यह दुनिया भी ऐसी है। जो बेहद का बाप, जिसको पतियों का पति कहा जाता है, उनको नहीं जानते। नहीं तो निश्चय बुद्धि को बाकी क्या चाहिए। हम भगवान के बच्चे हैं उनसे ऊँच कोई हो नहीं सकता। बुद्धि से काम लिया जाता है। स्टूडेंट पढ़ते हैं, जानते हैं हम 21 जन्म सदा सुखी रहेंगे। वह खुशी कम है? पूरा निश्चय न होने कारण दुःख फील होता है। मनुष्य को और क्या चाहिए! गाया जाता है ना पाना था सो पा लिया बाकी क्या चाहिए। साहुकार को सुख जास्ती होता है। यहाँ तो है ही दुःख की दुनिया। बाप कहते हैं साहुकारों को इतना सुख नहीं जितना तुम गरीबों को है; क्योंकि तुम गरीब को बाप मिल जाता है तो अथाह सुख मिल जाता है। अभी तुम समझदार बनते हो। यहाँ क्वीन का वज़ीर है तो वह समझदार होगा ना, तब तो राय देते हैं। वहाँ तो राजाओं में इतनी ताकत होती है जो वज़ीर आदि की दरकार ही नहीं। तुम्हारे ऊपर कोई चढ़ाई कर न सके। इतनी ताकत रहती है। ताकत कहाँ से मिलती है? बाप से। संशय बुद्धि को ताकत घूर(धूर) मिलेगी। सदैव रोगी बीमार भटकते-उटकते रहेंगे। याद नहीं है तो बल नहीं, जो दुख दूर हो जाये। कई तो मम्मा को याद करते हैं। निश्चय बुद्धि नहीं हैं। संशय बुद्धि विनशयन्ति। यानी दुख का विनाश हो जाता। इन सभी बातों को कोई बिरला ही समझते हैं। बाबा इनका (ब्रह्माबाबा) फोटो भी नहीं निकालने देते हैं। बाप दादा यह है, यह तो समझ की बात है ना। बाप खुद कहते हैं मामेकं याद करो। यह तो रथ है। इनको भी मामेकं याद करना है। फोटो आदि निकालना भी बेकायदे है; परंतु बच्चे कच्चे हैं, गुह्य बातों को नहीं समझ सकते हैं, तो ऐसी-2 फोटो की बातें करते हैं। हाँ, झूले में झूलते हैं। बाप दादा साथ झूलते हैं। भगवानुवाच इनसे झूलेंगे वहाँ तब जब निश्चय बुद्धि होंगे। दास-दासियाँ थोड़े ही झूलेंगी। वह तो बहुत दूर रहते हैं। यह बहुत-2 समझने की बातें हैं। अभी जबकि सच्च खंड की स्थापना होती है तो झूठ कब बोलना न चाहिए। कदम-2 पर झूठ बोलते हैं। तो उनका क्या हाल होगा! न चाहते भी माया झूठ बुलवाती है। उल्टा काम-कराती है; क्योंकि बेबी बुद्धि है।

ब्रह्मा भोजन की भी बहुत महिमा है। जिनको यह भोजन न मिले तो वह देवता पद पा न सके। यह सभी समझने की बातें हैं। विचार-सागर-मंथन करते रहे तो समझ आ सकते हैं। बड़ी अच्छी दैवी गुण चाहिए। झूठ बोलना, किसको दुःखाना, यह कोई दैवीगुण नहीं है। यहाँ देह-अभिमान की सेफ्टी फर्स्ट रखनी है। नहीं तो माया बहुत विकर्म कराती है। जितना देही-अभिमानी बनते जावेंगे, फिर कोई विकर्म न होना चाहिए। सभी पुरुषार्थी हैं नम्बरवार। शरीर को नहीं देखना है। दधिची ऋषि मिसल रात-दिन ईश्वरीय सेवा में। सेवा को पांव नहीं पड़ना है। मालिश नहीं करनी है। भक्ति आदि किया कुछ भी मिला? अभी बाप समझाते हैं भक्ति में कुछ भी नहीं मिलता तब तो बाप को पुकारते हैं। आगे चल देखना कितना झुकते हैं तुम्हारे आगे। तब कहेंगे इनमें तो ईश्वर की वा(णी) भरी हुई है। अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

विश्व की बादशाही का श्रृगार याद है?